International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 15-01-2024, Accepted: 30-01-2024, Published: 16-02-2024
Volume 6, Issue 1, 2024, Page No. 1-3

विषयः दूधनाथ सिंह की कहानियों में व्यक्त परिवार एवं महिला–विमर्श

ज्ञानी देवी गुप्ता अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो बठिण्डा, पंजाब, भारत

सारांश
हिंदी कथा लेखन के सफल हस्ताक्षर दूधनाथ सिंह जी का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के सोबथा गांव में 17 अक्टूबर 1936 को हुआ। सन् 1994 में सेवानिवृत्ति के बाद अब वे पूरी तरह से लेखन के लिए समर्पित हो गए थे।दूधनाथ सिंह को उत्तर प्रदेश के सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान भारत भारती मध्य प्रदेश की सरकार के शिखर समान मैथिलीशरण गुप्त सम्मान से सम्मानित किया गया था। भारतेंदु सम्मान) शरद जोशी समृति सम्मान) कथा कर्म सम्मान) साहित्य भूषण सम्मान आदि से सम्मानित किया गया था। असाध्य रोग केंसर से 11 जनवरी 2018 को इनका निधन हो गया। प्रगतिशील साहित्यकार के साहित्य से समाज में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। महिला अपनी पूरी जिंदगी अलग–अलग रिश्तो में खुद को बांधकर दूसरों की भलाई के लिए काम करती है। आज तक महिला को बहन मां पत्नी बेटी आदि विभिन्न रूपों में देखा है। जो हर वक्त परिवार के मान सम्मान को बढ़ाने के लिए तैयार रहती है। शहरी क्षेत्रों में तो फिर भी हालात इतने खराब नहीं है। पर ग्रामीण इलाकों में महिलाओं की स्थिति चिंता करने योग्य बनी हुई है। सही शिक्षा की व्यवस्था न होने के कारण महिलाओं की दशा दयनीय हो गई है। एक और बच्चे को जन्म देती है और पूरी जिंदगी उस बच्चे के प्रति अपनी सारी जिम्मेदारियों को निभाती है। बदले में वह कुछ भी नहीं मांगती है और पूरी सहनशीलता के साथ बिना तरफ किए अपनी भूमिका को पूरा करती रहती है। इस संबंध में लेखक दूधनाथ सिंह जी अपने विचारों को व्यक्त करते हुए अपनी कहानी संग्रह सपाट चेहरे वाला आदमी'कहानी रक्तपात आइसबर्ग दोनों कहानी में खंडित परिवारिक संबंधों को दर्शाया गया है।

मूल शब्दः सहनशील, दयनीय, शिक्षा की व्यवस्था, रक्तपात, वचनामृत

लेखक ने रक्त पात कहानी का नायक संजय जो कई वर्षों के बाद अपने घर और गांव वापस लौट कर आया था वह अपने ही घर में एक मेहमान की तरह महसूस करता है। इसी प्रकार उषा प्रियंवदा ने भी अपनी वापसी कहानी में गजाधर बाबू के रेलवे की नौकरी से रिटायर होने के बाद जब वह घर लौटते है। तो इसी प्रकार की मनोवृति देखने को मिलती है।

रक्तपात कहानी का नायक संजय भी उन्हीं की तरह अनुभव करता है। और लिखता है। कि ''उसे लगा कि अपने ही घर में वह एक अतिथि है। और अपने परिचित को, घरों की दीवारों ताको सीढियां को नहीं छू सकता हर कहीं एक बाध्यता है। एक ना जाने कैसी विवश खिन्नता वह उठकर टहलने लगा।[1]

इसी प्रकार रक्तपात कहानी में कथा नायक अपनी बूढ़ी मां के पास बैठा होता है। सिढियो पर धमक सुन पड़े पत्नी घपघपा आती हुई ऊपर आ रही थी वह उठ कर बैठ गया ऊपर आते ही उसकी नजर पड़ गई बोले वहां क्यों बैठे थे कुछ नहीं ऐसे ही बे निकट चली आई क्या खुसर फुसुर चल रही थी बूड़िया बडी चार सौ बीस है।[2]

'सपाट चेहरे वाला आदमी' कहानी संग्रह आइसबर्ग कहानी का नायक बिनय अपने घर पर अकेला था वह अकेला होने के कारण परेशान हो जाता है। और अपने सगे भाइयों और बहनों बेबी और चचेरे भाई को अपने पास बुलाता है। लेकिन उन सब की बातों को सुनकर वह मन ही मन में सोच करता है। कि इनको बुलाकर मैंने कोई अनजाने में गलती तो नहीं कर दी है। इस प्रकार इस कहानी के शब्द दृष्टव्य बन जाते है। इस कहानी में लेखक ने परिवार के सदस्यों का बिखरते हुए दर्शाया है। सभी अपने अपने कार्य में व्यस्त है। जैसे कोई एक दूसरे से अनजान है। ऐसा व्यवहार करते है। घर में सभी परिवार के सदस्य अपने अपने कमरों में रहते है। जैसे पड़ोस में रहने वाले लोग है। वर्तमान समय में परिवार की बिखरती हुई परिस्थिति को दर्शाया गया है।

इस संबंध में वह लिखते है कि विनय के मन में फिर वैसे ही निराशा घर कर लिया उसे लगा कि सभी यहां पर आने का एहसान जता रहै। है। और असुविधा महसूस कर रहै। है। यह विचार मन में आते ही उसके दिल को अंदर ही अंदर गहरी ठेस सी लगी क्या सच में अब वह सब कुछ लूट नहीं सकता क्या सच में उसने अपराध किया है। क्या मात्र उसका अकेलापन ही उसका अपना है।[3]

इस प्रसंग में कहानी आइस बर्ग शीर्षक की सार्थकता प्रदर्शित की गई है। क्यों कि लेखक ने उसे अकेलेपन और आत्मीय लोगों के व्यवहार गत ठंडेपन का ही सशक्त प्रत्येक बनाया है।

'आइसबर्ग'कहानी का नायक विनय विदेश में अकेला रहता है। जब वह घर वापस आता है। वह अपनी बहन बेबी के साथ पत्र लिखकर वार्तालाप करता था बहन के द्वारा भेजे गए पत्र से हमें नायक बनने के खंडित परिवारिक संबंधों की जानकारी मिलती है। लेकिन जब वह घर वापस आता है। तो घर के सभी सदस्यों का व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है। सभी अपने अपने कार्य में व्यस्त होते है। और विनय अकेला रह जाता है। जब वह अकेलेपन से परेशान होकर अपने चचेरे भाई वह बहन को अपने पास बुलाता है। तो वह ऐसा महसूस करता है। जैसे मैंने उनको यहां बुलाकर कोई गलती कर दी है। वह सभी मुझ पर एहसान भरी बातें करते है। यहां पर नायक के परिवार का विघटन को प्रस्तुत किया गया है। इस संदर्भ में वह लिखता है। कि''जिस साल जगत ने घर से अलग होकर शादी कर ली थी उस साल सुबोध की भी शादी कर दी गई थी इस अवसर पर भी वह पहुंच नहीं सका था बधाई का तार दादा के हाथों में पढ़ा था बेबी ने लिखा था दादा ने तार चिंथ कर फेंक दिया और फेंक न देते तो क्या करते एक तुम्हारी वजह से सभी पराये थोड़े ही हो जाते है। एक तुम हो जिसे कुछ भी समझाया नहीं जा सकता दादा कभी–कभी पागल से हो उठते है। तुम्हारे लिए इतना पराया पन क्यों दिखाते हो बिनु।[4]

आइसबर्ग कहानी का नायक बिनने अपने घर परिवार से बहुत दूर रहता था वह अपने परिवार से नाराज था विनय की बहन बेबी अपने भाई से निरंतर पत्र व्यवहार करती हुई उसे घर के बारे में सब कुछ बताती थी लेकिन विनय पर उसकी बातों का

कोई भी फर्क नहीं पड़ता था। उसके पत्र में किसी हम उम्र दुनिया की सुकून भरी धीमी आवाज थी जो कुछ उसके भार घट रहा था। वही बेबी के पत्र उसकी ही सूचना उसे देते थे उन जानकारियों के बारे में उसे एकाएक पहले विश्वास नहीं होता था, लेकिन कहानीकार के मंतव्य को स्पष्ट करते हुए कहते है कि अरे यह हो गया अब यह भी हो गया चित्र मायके वालों से भी झगड़ के चली गई। उसने इस्तीफा दे दिया। वह कलकत्ते में नौकरी कर रही है। जगत के लड़के की सालगिरह है। रामकृष्ण वचनामृत से कुछ सुनाऊं लेता आया हूं बहन इस रामकृष्ण वचनामृत के लेते आने पर आश्चर्य से उसका मुंह ताकती रह गई थी।[5]

लेखक ने इस कहानी में नायक के माध्यम से समाज में होने वाले परिवर्तनों का पर्दाफाश करते हुए लिखते है कि कहानीकार ने हर दिन कामकाज में निरंतर होने वाली मौतों के बाद मानव के यंत्र व कार्य या व्यवहार करने की घटनाओं का अपनी कहानियों में चित्रण किया है। वह आज के मानव को दुखों की चरम सीमा हो जाने पर भी मानव एक मशीन की तरह सोचने लगता है। जिस प्रकार मशीन से कितना भी कार्य करते रहो अच्छा या बुरा उसे कोई फर्क नहीं पड़ता उसी प्रकार विनय की भी ऐसी स्थिति हो गई थी आइस बर्ग कहानी का नायक बनने अपनी बहन बेबी के पत्रों का इंतजार करता था बी ने अपने स्वभाव के कारण अपने परिवार वालों से प्रेम करने लगा क्यों कि इससे पहले उसके सभी संबंध टूट गए थे जैसे उसकी पूरी दुनिया ही बिखर गई हो जो न जाने कहां छी टक्कर हो गई थी सिर्फ बहन के पत्र ही उन सब खोए हुए रिश्तो को बटोरने का कार्य करते थे इस संबंध में वह लिखते है कि ''धीरे–धीरे उसे यह भी महसूस होने लगा कि बेबी के खतने आने पर वह अपने आप को बेचौन और असुरक्षित सा पता है। तो क्या खोई हुई दुनिया के प्रति मन में कहीं इतना गहरा लगाव था लेकिन क्या इस आंतरिक बंधन को कोई भी समझता है। दूसरे तो दूसरे खुद बेबी ने भी एक बार उसे स्वार्थी निर्देश आतम रथ की पदवी दे डाली थी लेकिन उसके बावजूद क्या संभव था कि वह जो नहीं था उस तरह अभिनय करता।[6]

इस कहानी के कथा नायक विनने के प्रति परिवार के सभी सदस्यों का व्यवहार नाराजगी भरा दर्शाया गया है। और सब उसकी हंसी मजाक भी उड़ाते है। नायक विनय को घर के किसी भी कार्य को करने के लायक नहीं समझा जाता यहां तक कि जब है। सभी के बीच बैठता है। तो सब उससे मुहै। चुराने लगते है।। दद्द के नैचे की गुड़गुड़ाहट के बीच कभी–कभी कुछ शब्द करते हुए सुनाई पड़ते विन्नू ने आज तक एक पैसा भी नहीं यह दद्दा होते बेचारा क्यों आप लोग यह बेबी होती।[7]

''महात्मा विनय और फिर हंसी का एक ठहाका जगत का बहस के दौरान जब भी वह ड्राइंग रूम में प्रवेश करता सभी सकते में आ जाते जगत सिंगार मुंह में दबाए उठ जाता सुबोध आराम कुर्सी में ढीला हो रहता बेबी अंगीठी देखने लगती और दद्दा तेजी से अपनी गुड गुड़ी खींचने लगते सभी बात का कोई सिलसिला खोजते हुए उस ओर से विमुख हो जाते।[8]

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है। कि दूधनाथ सिंह ने अपनी कहानियों में परिवारिक संबंधों की नियति और त्रासदी को गहराई से अनुभव करके कहानियों के माध्यम से विघटित होते परिवारों के चरित्रों की रचना की है। इसी प्रकार उन्होंने अपने अन्य कहानियों में भी परिवारिक संबंधों के बिखरने के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए है।

लेखक दूधनाथ सिंह अपनी कहानी संग्रह माई का शोकगीत और हुंडार'कहानी में नारी की उत्पीड़न के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए गए है।

रचनाकार दूधनाथ सिंह की कहानी हुंड़ार मैं कहानी के नायक राय साहब जैसे पुरुष नारी का दैहिक शोषण करने के साथ–साथ उसे हर प्रकार की यातनाएं दी जाती है। कथानक राय साहब के घर पर काम करने आने वाले नौकरानी को 1000रुपये चोरी करके भाग जाने वाले धोबिन के खिलाफ थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने जाते है। वह अपने साथ मकान मालिक और राय साहब को भी ले जाते है। वह दोनों थाने के दरोगा साहब को जानते थे इसलिए उन को साथ ले जाना आवश्यक था जब उस धोबिन को ढूंढ कर थाने में लाया जाता है। तो वह कथा नायक राय साहब की दुष्ट चरित्र तक और निर्मलता का पर्दाफाश करती हुई विस्तार से कहती है। कि ''भाई लोग कसाई है। साहब जी बे बात थुर देते रहै। भूखे मत रहूं साहब जी जिस पर से काम दिन–रात लेते रहै। भलमनी जान के चली आई साहब जी लेकिन बहू जी के गांव जाते है। दहीजरा का मन बदलेगा कईसे तके रहा साहब जी बाथरूम में कपड़ा खिंचता रहै। तो जा के पीछे से पकरी लिंक्स हम धक्का दियो साहब तो गिर गवा टांग में मौत का बहाना बना लिंक्स हो सोचो की बहू जी आएगी तो हम ही को कलंक लगेगा सोहम का दया आई गई साहब जी हम से मालिश करवाई और जबरदस्त कींस पूरा हुंकार है। साहब जी आदमी के कोनो लक्षण नहीं ओके भीतर।9

कहानी के नायक राय साहब के घर से नौकरी करने वाली धोबिन को चोरी के इल्जाम में जब पुलिस पकड़ कर थाने में ले जाती है। तो दरोगा साहब जब उसे उसके पति के बारे में पूछता है। तो यही दुखी धोबिन अपने पति के संबंध में कठोर हृदय ता पर गुस्सा करते हुए दरोगा साहब से कहती है कि मर्द ने छोड़ दिया साहब जी साफ सूप रहती थी तो उसे मान देना चाहिए था उल्टे शक करने लगा कहा घाट पर मर्दों से आंख लड़ आती है। अब गोबर भी लपेट लो तो कसक का तो कोए इलाज है। साहब जी हमारा बच्चा ले ली खींच मैं बन बन भटक को साहब जी सीता जी हो गई तभी यह राक्षस मिल गवा हम कहो हम चिला देबै तो हमारा मोहित दबा देता रहा हम कहो कुछ हुआ जाई तो कहो के नए रहब तो हंसते रहा।[10]

हूंकार कहानी में ही शोषित धोबिन राय साहब के नाम आने पर सब कुछ उसकी पत्नी से कह देने की धमकी भी देती है। लेकिन फिर भी वह उसे खूब मारते है। और जब इससे भी उनका मन नहीं भरता तो वह उस पर चोरी का इल्जाम लगा देते है। और उसे पुलिस को पकड़ा देते है। लेकिन जब धोबिन दरोगा साहब के सामने पूरी बात का खुलासा करती है। तो वह कहती है। कि तब साहब जी कल हम अजीज ओ के कहां की आप नहीं मानते तो बहु जी के आपे पर हम सब बात उनसे कहीं देवें बस साहब जी इन्है। सुनते बल बल आने लगा हमका खूब लथेरिस ई देखे साहब जी और ओहू से मन नहीं भरा तो हम पर चोरी का इल्जाम दी।[11]

लेखक दूधनाथ सिंह की कहानी संग्रह का 'माई का शोक गीत' पांचवा कहानी संग्रह है। इस कहानी में कथा पत्र गंगा माई गांधी जी की चेली के रूप में दर्शाई गई है। वह एक साधारण और कम पढ़ी लिखी औरत है। वह अपने देश से बहुत प्रेम करती है। इसलिए वह घर घर जाकर सब देशी वस्तुओं का प्रचार करती है। गंगा माई अपनी सहेली कन्या को पति के अत्याचारों से मुक्त नहीं करा पाती इसलिए गंगा माई महात्मा जी की अलख जगाते हुए कनिया के घर जाती है। और भारत माता को छुड़ाने की बात करती है। तभी कनिया कहती है। कि पहले हमके छोड़ हवाओं न सखी हम भी तो काल कोठरी में बंद है। हमारे भी तो कुर्ती फट गई है। हम भी तो बेपर्दा हो गए है। यह भी तो एक ठोस राक्षस पहरा दे रहा है।[12]

कहानी का पात्र मुसाफिर सिंह अपनी पत्नी कनिया को हर रोज मारपीट करता है। तथा उसे अनेक प्रकार से मानसिक यातनाएं देता है। इससे वह बहुत दुखी है। यह सब बात गंगा माई को पता है। इसलिए वह आस–पड़ोस की सभी औरतों को उसकी इस करतूत हरकत को सभी औरतों को बता रही है। इसमें से

एक औरत पूछती है। कि मुसाफिर सिंह अपनी पत्नी को हर दिन क्यों मारता है। वह कहती है। कि बाबू साहब सोचते है। उनकी औरत क्यों रो पड़ी है। वह तो उसे रोज ही या जब मनचाहा लथेड़ लथेड़ कर मारते ही रहते है। जैसे बे बबूल की दातुन कुचलते है। और उसे बीच–बीच में थोपते रहते है। उसी प्रकार कनिया को लथेड़ते है। और थूकते जाते है।[13]

इस कहानी की नारी पात्र कनिया एक धार्मिक विचारों वाली औरत है। जो अपने पति को परमेश्वर के समान पूजा करती है। लेकिन उसका पति एक कसाई से भी बेहतर है। जो हर रोज उसे मारपीट करता है। शायद पुरुषों की अहम भावना और पशु तब की वृत्ति जाग जाती है। यहां पर लेखक ने पति पत्नी के बीच होने वाले झगड़ो को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। पति के अत्याचारों से अत्यंत दुखी अत्याचार उत्पीड़न आधी बातें स्पष्ट हो जाती है। इस संबंध में कनिया कहती है। मुसाफिर सिंह दोहाजू है। अधेड़ बरपक्का मूंछल और हमारी कन्या गोरी चटक जवान तो मुसाफिर सिंह को बार–बार गुस्सा आता है। की कनिया जवान क्यों है। सुंदर क्यों है। शो थूर थूर के हमारी सखी कनिया को बुढ़वा रहे। है। अरे ई नहीं होता कि अपनी चीज बसत है। संभाल कर रखें और यह भी औरतें कहती है। कि मुसाफिर सिंह कोनो बस वर्क नहीं हुआ इसकी भी खिसियाई है।[14]

'माई का शोक गीत कहानी में बलदेव की पत्नी नारियों की सभा में गंगा माई की बेटी की भूमिका निभाने वाली गायत्री सोन चिड़िया से कहती है कि नारी का घर में खाना पकाना वास्तव में बिना दाम की मजदूरी ही है। इस प्रकार जोर देकर अपने कथन की व्याख्या करने लगती है। वह कहती है कि जिस प्रकार घर में सारा दिन काम करते रहो वह पुरुष को दिखाई नहीं देता लेकिन घर से बाहर जाकर पुरुष जो कमा कर लाता है और घर पर आकर औरत पर हुकम चलाता है।

निष्कर्ष

दूधनाथ सिंह की कहानियों में प्राचीन काल में जो नारी की स्थिति थी वह वर्तमान समय में भी भारतीय नारी उसी दौर से गुजर रही है। पहले भी नारी को पुरुषों के बराबर अधिकार नहीं दिया जाता था लेकिन कानूनी कागजों में आज नारी को पुरुषों के बराबर अधिकार दिया गया है। फिर भी वह शोषण की शिकार होती जा रही है। रूस उसे अपने पैर की जूती के समान समझते है। अनेक प्रकार से महिलाओं को यातनाएं दी जाती है। मानसिक यातनाएं दी जाती है। जिससे तंग आकर लड़ कियां अपनी आत्महत्या तक कर लेती है। लेकिन वर्तमान समय में नारी क्यों शिक्षा दी जाती है। कि वह अपने प्रति जागरूक हो अपने अधिकारों का सदुपयोग करें दूधनाथ सिंह ने अपनी कहानी में नारी को पुरुष जाति के अत्याचारों को पहले की तरह से हमने करने की प्रेरणा देते है। उन्होंने लिखा कि आज की नारी ने पुरुषों के सामने अपने अधिकार की मांग के लिए लड़ने और जूझने की नसीहत की गई है। आज तो जो कि बदलते हुए समय के पूरी तरह से अनुरूप ही कही जाएगी वह अपने अधिकारों का प्रयोग करने लगी है। तथा आज की नारी हर क्षेत्र में पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बढ़ रही है।

संदर्भ सूची

1. दूधनाथ सिंह सपाट चेहरे वाला आदमी रक्तपात कहानी पृष्ठ 83
2. दूधनाथ सिंह सपाट चेहरे वाला आदमी रक्तपात कहानी पृष्ठ 83
3. 'आइसबर्ग' कहानी 84
4. 'आइसबर्ग' कहानी पृ0 87
5. श्रीवास्तव जगदीश सहाय समाज दर्शन की भूमिका पृष्ठ 4
6. ज्ञान देवी हिंदी कहानी को पंजाब का योगदान दांपत्य संबंधों के संदर्भ में पृष्ठ 8
7. दूधनाथ सिंह सपाट चेहरे वाला आदमी पृष्ठ 149
8. वही पृष्ठ 149
9. वही पृष्ठ 108
10. वही पृष्ठ 114
11. कपूर प्रमिला कामकाजी भारतीय नारी पृष्ठ 39
12. दूधनाथ सिंह माई का शोक गीत पृष्ठ 29
13. दूधनाथ सिंह कहानी संग्रह माई का शोक गीत पृष्ठ 80
14. वही पृष्ठ 81